कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी॰ ए॰ स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा
पार्ट III

परिवर्तन कविता का भाव - सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए।

'परिवर्तन' शीर्षक कविता छायावाद के आधार स्तम्भ कवि सुमित्रानन्दन पंत की एक उत्कृष्ट रचना है। प्रस्तुत कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है। कि यह संसार परिवर्तनशील है क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। सुबह परिवर्तित होकर दोपहर और दोपहर परिवर्तित होकर शाम हो जाता है। रात बदल कर दिन रूप धारण कर लेती है। कालचक्र घुमता रहता है। और दुनियां बदलती रहती है।

इस जीवन में भी जब यौवन बीत जाता है। तब बुढ़ापा आती है। यौवन स्थिर नहीं रहता। यह समय पाकर ढलता है। और वृद्धावस्था आ जाती है। जहाँ रूप और लावण्य था वह नरकंकाल प्रकट हो जाता है। जो कल तक कांतिवान था वह आज बेंचूल भर गया। जिन आँखों में चमक थी. उसमें आंसू है जहाँ दरिद्रता थी. वह समृद्धि है जहाँ वियोग था, वहाँ मधुर संयोग

है, जहाँ काँटे थे वहाँ फूल है। दरिद्रता थी वहां समृद्धि है, जहाँ वियोग था वहाँ मधुर संयोग है जहाँ काँटे थे वहाँ फूल है जिसके सिर पर सोने का ताज था आज दरिद्रता की प्रतिमूर्ति बना बैठा है परिवर्तन इतना शाश्वत है कि जन्म के आँखें खुलते ही मृत्यु की आँखें बन्द हो जाती है परिवर्तन अत्यन्त निष्ठुर होता है उसमे जरा भी दया नहीं होती है।

जो विश्व विजेता सिकन्दर कहलाता है। उसका कहीं नामो निशान नहीं है जो धूल में सना था पद्दलित था आज उसके सिर पर ताज है। जो कल सर्वोन्नत था आज पद दलित है। निश्चय ही समय बलवान है कवि के ही शब्दों में —

काल का अकरुण भृकुटि विलास
तुम्हारा ही परिहास।
विश्व का अश्रुपूर्ण इतिहास
तुम्हारा ही इतिहास।

प्रकृति अगर रूक कर अपनी क्रदृष्टि डाल दे तो निश्चय ही प्रलय हो जाता है उसका भ्रूविलास प्रकृति को पतन के गर्त में पहुँचा देता है।

Scanned with CamScanner